परिणाम और पुरुषार्थ

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय संस्कृति का सार परिणाम और पुरुषार्थ में निहित है। परीक्षाा में जब हम प्रश्न पत्र हल करते हैं तो ध्यान से ज्ञान का प्रदर्शन करते हैं। योग्यता और अयोग्यता का परीक्षण परीक्षा में होता है। परीक्षण परिणाम के रूप में सामने आता है। इस जीवन में जो कुछ हम कर रहे हैं वह प्रश्न पत्र की तरह है। जो किया जा रहा है वह प्रश्न पत्र का उत्तर है। यह जीवन की परीक्षा है। मानव के जीवन में बचपन, युवावस्था, वृद्धावस्था आती है और अन्त में मनुष्य मृत्यु को प्राप्त करता है। सम्पूर्ण जीवनकाल में किसको सुख दिया, किसको दुःख दिया, किसके साथ अच्छे भाव हैं या किसके साथ बुरे भाव हैं। ये भाव अगले जन्म में द्रव्य कर्म बन जाते हैं। भाव के अनुरूप अगले जन्म में इसका परिणाम प्राप्त होता है।

जन्म के साथ ही जीव सब कुछ लेकर के आता है। जन्म के साथ हमारा उदय भाव परिणाम के रूप में आता है। कौन माता है? कौन पिता है? क्या करना है? भाई–बहिन, जाति–गौत्र का निर्धारण कर्म के आधार पर पहले से ही हो जाता है। जन्म के साथ भुगतान प्रारम्भ हो जाता है। गरीबी–अमीरी, सुख–दुःख, लाभ–हानि आदि पूर्वजन्म के परिणाम है। मनुष्य यह समझता है कि हम पुरुषार्थ से प्राप्त करते हैं। यह शरीर मन, वचन और काया के द्वारा पूर्वकृत कर्मों को भुगतता है। जीवन की फिल्म चलती रहती है। फिल्म की घटना की तरह जीवन में भी उतार चढ़ाव आता रहता है।

परिस्थितियों के अनुकूल और प्रतिकूल राग–द्वेष भाव रखना बंधन का कारण होता है। एक अदृश्य शक्ति मानव को कार्य कराती है। कभी–कभी बहुत पुरुषार्थ करने के बावजूद भी सफलता नहीं मिलती। कभी–कभी थोड़े से पुरुषार्थ से बहुत अच्छा परिणाम मिल जाता है। इसका क्या कारण है? इसका कारण है पूर्वजन्म के बोये हुए बीज उदय भाव में आकर अपना परिणाम देते हैं। जैसा प्रारब्ध होता है वैसा परिणाम मिलता है।

पुरूषार्थ दो शब्दों से मिलकर बना है–पुरुष तथा अर्थ। पुरुष का अर्थ है विवेकशील प्राणी तथा अर्थ का तात्पर्य है लक्ष्य। अतः पुरुषार्थ का अर्थ है विवेकशील प्राणी का लक्ष्य। इस अर्थ में पुरुषार्थ एकओर सांसारिक और पारलौकिक लक्ष्य और कर्त्तव्य है तथा दूसरी ओर इसमें नैतिकता आर्थिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को संतुलित किया गया है। पुरुषार्थ के अंतर्गत मनुष्य भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए धर्म का भी समान रूप से अनुसरण करके मोक्ष का अधिकारी होता है। मोक्ष भारतीय जीवन का परम लक्ष्य है। इसी की प्राप्ति ही जीवन का उद्देश्य है।

पुरुषार्थ चार है– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म शब्द का अर्थ धारण करना है। धर्म प्रजा को धारण करता है। धर्म मानव को कर्त्तव्यों सतकर्मों एवं गुणों की ओर ले जाता है। धर्म व्यक्ति की विविध रुचियों, इच्छाओं, आकांक्षाओं, आवश्यकताओं आदि के बीच संतुलन बनाये रखता है। सदाचार को धर्म का लक्षण माना गया है। सदाचार ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है। धर्म वही है जो किसी को कष्ट नहीं देता अपितु लोककल्याण करता है। धर्म का ही आश्रय ग्रहण करके व्यक्ति इस संसार में तथा परलोक में शांति प्राप्त करता है। जो व्यक्ति धर्म का सम्मान करता है, धर्म उसकी सदैव रक्षा करता है। शरीर नष्ट हो जाने पर सबकुछ छूट जाता है, किन्तु धर्म जीव के साथ जाता है।

धर्म को साक्षात् ईश्वर का स्वरूप माना गया है। तप, शौच, दया और सत्य धर्म के चार अंग हैं। धर्म का संबंध मनुष्य के अंतःकरण से होता है। धर्म का पालन मनुष्य को अंतर्मुखी बनाकर शुद्ध कर देता है। दूसरा महत्वपूर्ण पुरुषार्थ है– अर्थ। जिस प्रकार आत्मा के लिए मोक्ष, बुद्धि के लिए धर्म और मन के लिए काम की आवश्यकता होती है उसी प्रकार शरीर के लिए अर्थ की आवश्यकता होती है। अर्थ धर्म का मूल है। अर्थ के अभाव में जीवन चलाना बहुत ही कठिन हो जाता है। इसीलिए अर्थ को भी पुरुषार्थ में स्थान देकर इसे उचित मानवीय आकांक्षा माना गया है।

मोक्ष प्राप्ति के लिए भी अर्थ जरूरी है। अर्थ सम्पन्न व्यक्ति के पास मित्र, विद्या, गुण क्या नहीं होता? अतः धन में सभी गुण समाहित हो जाते हैं। यदि अर्थ, धर्म का विरोधी हो तो उसे त्याग देना चाहिए। अर्थसंचय धार्मिक आधार पर होना चाहिए। अधार्मिकता से अर्जित धन को

दुःखद और निंदनीय कहा गया है। तीसरा महत्वपूर्ण पुरुषार्थ काम है। काम का मुख्य उद्देश्य संतानोत्पत्ति तथा वंशवृद्धि करना है।

काम का सर्वोत्तम और आध्यात्मिक उद्देश्य पति–पत्नी में आध्यात्मिकता, मानवप्रेम, परोपकार तथा सहयोग की भावनाओं का विकास करना होता है। काम शब्द से कला संबंधी भाव, विलाश, ऐश्वर्य तथा कामनाओं का भी बोध होता है। काम जीवन का प्रमुख अंग है किन्तु इसकी अधिकता भयंकर दुर्गुण है। धर्म अर्थ की प्राप्ति का कारण है और काम अर्थ का फल है। जो व्यक्ति धर्मरहित काम का अनुसरण करता है वह अपनी बुद्धि को समाप्त कर देता है। पुरुषार्थ के माध्यम से व्यक्ति विभिन्न उत्तरदायित्वों को निष्ठापूर्वक निभाने में समर्थ हो सकता है।